15 पन्ना का त्याग

"बुंदेले हर बोलो के मुँह, हमने सुनी कहानी थी;
खूब लड़ी मर्दानी वह तो, झाँसी वाली रानी थी।''

ये पंक्तियाँ गुनगुनाता हुआ खूबीलाल घर में आया और जैसे ही अपना बस्ता मेज पर रखकर लौटना चाहा तो देखा कि जीजी खिड़की के पास बैठी हुई बड़े ध्यान से कोई पुस्तक पढ़ रही है।

"जीजी" "..................."

"जीजी ! ओ जीजी!''

"हाँ, आ गए खूबी ?''

"हाँ, आ गया। तुम तो पढ़ने में इतनी डूब गई थी कि मेरे आने का भी पता नहीं चला। सुनो जीजी, आज हमारी बाल–सभा में बड़ा मजा आया।''

"अच्छा ! क्या हुआ ?''

"अन्त्याक्षरी हो रही थी न! रवीन्द्र का नम्बर आया तो "ब" से आरम्भ होने वाली कविता उसे आई ही नहीं । तब मैंने वह पंक्ति बोल दी .... बुंदेले हर बोलो के मुँह........... ।"

"तो इसमें कौनसी बड़ी बात हो गई ?''

"सुन तो सही, जीजी ! मैंने एक पंक्ति बोली थी न ? कुछ लड़कों ने हल्ला कर दिया और कहा – पूरी कविता बोलो, पूरी कविता बोलो। मैंने खूब जोरदार स्वर में सुना दी। इतनी तालियाँ बजी जीजी, कि कुछ पूछो मत।''

"अच्छा! तभी तुझे बड़ा मजा आया।" जीजी ने हँसकर कहा ।

"हूँ" खूबीलाल ने कहा। फिर पूछा, "तुम क्या पढ़ रही थी, जीजी ?''

"नारी की कहानी है – नाम है उसका पन्ना धाय" "पन्ना धाय ?''

"हाँ।''

"वह नाटक तो तुम्हारे पाठ्यक्रम में है न ?'' खूबीलाल ने जीजी के निकट आकर भोलेपन से पूछा।

जीजी ने हँसकर कहा, "मैं तेरा मतलब समझ गई। तू अब कहेगा – मेरी अच्छी जीजी,

मुझे उस नाटक की कहानी सुना दो न।''

खूबीलाल हँसने लगा।

"सुनो खूबी, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती, बेगम चाँद बीबी, अहिल्याबाई इत्यादि तो वे महिलाएँ हैं, जिनके पास शक्ति थी संगठन का बल था; मगर मैं जिस नारी की कहानी कह रही हूँ उसका महत्त्व इस दृष्टि से अधिक है कि वह रानी नहीं थी, बेगम नहीं थी, वह एक धाय माँ थीं और जो कुछ उसने अपने राज्य के लिए, अपने स्वामी के लिए किया, वैसा सम्भवतः आज तक दुनिया में कोई नहीं कर पाया।''

"कल्पना करो भैया कि एक माँ के सामने उसके एक मात्र लाड़ले बेटे की अत्याचारी द्वारा तलवार से टुकड़े–टुकड़े कर दिए जाए तो उस माँ के मन पर क्या बीतेगी ?''

"क्या ऐसा भी हो सकता है ?''

"हाँ ! मगर पन्नाधाय की कहानी मजबूरी की कहानी नहीं थी, खूबी ! स्वेच्छा से किए गए त्याग और बलिदान की कहानी थी।''

"सुनो ! चित्तौड़गढ़ में महाराणा संग्राम सिंह की मृत्यु के बाद बड़ी अव्यवस्था फैल गई। उनके बड़े पुत्र भोजराज पहले ही कालग्रस्त हो गए थे, दूसरे पुत्र विक्रम सिंह चौदह–पन्द्रह वर्ष के थे और सबसे छोटे उदय सिंह केवल सात–आठ वर्ष के। उदयसिंह की देखभाल पन्ना धाय करती थी। उसके भी एक पुत्र था – चन्दन, उदय सिंह जितना ही बड़ा।''

"महाराणा संग्राम सिंह के निधन के बाद विक्रमसिंह का राजतिलक किया गया। मगर, एक दासी पुत्र बनवीर उस समय भयंकर षड्यंत्र में लगा हुआ था । उसने छोटे–बड़े कर्मचारियों को अपनी ओर मिला लिया था और चित्तौड़ की राजगद्दी पर घात लगाए बैठा था।''

"खूबीलाल, थोड़ी कल्पना करो कि जहाँ अधिकाँश कर्मचारी पथ–भ्रष्ट हों गए हो और अबोध राजकुमार राजनीति की चाल से अनभिज्ञ हों, वहाँ क्या परिणाम हुए होंगे।''

खूबीलाल स्तब्ध होकर सुन रहा था ।

बोला, "सचमुच उनकी स्थिति कठिन हो गई होगी, जीजी।''

"कठिन ही नहीं, खूबी ! भयंकर रूप से दुर्भाग्यपूर्ण हो गई थी। उस महादुष्ट ने एक चाल चली थी। नवरात्र में उसने सारे चित्तौड़ में नाच–रंग का आयोजन कराया था और उसमें विशेष रूप से दोनों राजकुमारों को बुलाने की योजना बनाई थी।''

'अच्छा'

"हाँ, उसकी योजना थी कि नाच–रंग में लगी जनता को धोखे में रखकर वह दोनों की हत्या कर देगा और तब उसका मार्ग निष्कंटक हो जाएगा। विक्रमसिंह तो उस धोखे में आ गया; मगर, उदयसिंह पर पन्ना धाय ढाल बनकर छाई हुई थी, इसलिए वह उसे धोखे में नहीं फँसा सका। बनवीर भी जानता था कि जब तक पन्नाधाय है तब तक उदयसिंह को

धोखे से मारना संभव नहीं होगा। उधर पन्नाधाय को भी पता लग गया था कि नगर–व्यापी नाच–रंग के बीच हत्याकांड करने वाला है। मगर, वह उदयसिंह को लेकर कहीं बाहर भी नहीं जा सकती थी।''

क्यों जीजी ?

"बनवीर के आदमी सब और चौकसी पर थे और बाहर निकलना निरापद नहीं था। महल में उसे छिपाने से भी कोई लाभ नहीं था, क्योंकि सभी और बनवीर के भेदिये मौजूद थे।''

इस भयंकर संकट में पन्नाधाय ने अपने मन में एक ऐसा दृढ़ संकल्प कर लिया था जैसा कोई माँ शायद नहीं कर सकेगी।

उसने उदयसिंह को नाच–रंग में नहीं जाने दिया था, इसलिए वह रूठकर रसोईघर में ही सो गया था। कीरत नाम का बारी पन्नाधाय का भक्त था, वह महलों से जूठी पत्तलें इकट्ठी करके ले जाने का काम करता था। पन्नाधाय ने उसे सिसोदिया वंश की आन बचाने के लिए यह काम सौंपा कि वह अपने टोकरे में उदयसिंह को छिपाकर चित्तौड़ के किले से बाहर पहुँचा दे और पन्नाधाय के वहाँ आने तक उसकी रक्षा करे।

कीरत बारी बात और धर्म का धनी था। उधर कीरत गया और इधर पन्नाधाय का एक मात्र बेटा – चंदन, तमाशा देखकर लौटा । वह माँ से राजकुमार उदय सिंह के बारे में पूछता रहा (क्योंकि वे दोनों प्रायः साथ–साथ ही खाना खाते थे) पर माँ ने हाँ–हूँ करते हुए उसे उदय

सिंह के शयनकक्ष में ही लाकर खाना खिलाया; प्यार किया और फिर उदयसिंह के पलंग पर ही उसे बिठाकर किसी गहरी चिंता की छाया में डूबे–डूबे कई अच्छी–अच्छी कहानियाँ सुनाई। माँ की ममता की छाती पर पत्थर रखकर वह सब कुछ कर रही थी, जो दुनिया की कोई माँ कभी नहीं कर सकती। राज्य की रक्षा पर, राजवंश की रक्षा पर, चित्तौड़ के गौरव की रक्षा पर, सत्य और निष्ठा की रक्षा पर आज माँ की ममता की कठोर परीक्षा थी।

अबोध चंदन माँ के दुलार की छाया में शीघ्र ही निद्रामग्न हो गया – सो गया; ऐसी नींद सो गया कि उस नींद का सवेरा आज तक नहीं हुआ।

थोड़ी देर में षड्यंत्री हत्यारा बनवीर विक्रम सिंह के खून से रंगी तलवार लेकर उदयसिंह के कक्ष में घुसा। पन्ना से कड़क कर उसे धिक्कारा, फटकारा, मगर राज्य के नशे में पागल उस दुष्ट ने अट्टहास करते हुए कहा – "पन्ना आज भवानी मुझ पर प्रसन्न है देख ! इस तलवार की धार पर सिसोदिया वंश के दोनों सपूतों का खून अब एक होने वाला है। आज तू उदयसिंह को मेरे हाथ से नहीं बचा सकेगी।''

एक बार माँ की ममता ने सिर उठाया और पन्ना बनवीर के सामने गिड़गिड़ाने लगी – "अरे, नीच ! पातकी !! अबोध बालकों की हत्या करके तू क्या बहादुरी बखानता है ? तू उदयसिंह की हत्या न कर; मैं उसे लेकर कहीं दूर चली जाऊँगी ! कुछ तो दया कर!'' मगर, बनवीर का अट्टहास सुनकर उसका क्षत्रियत्व जाग उठा और वह कटार लेकर बनवीर पर टूट पड़ी। भाग्य दुष्टों का भी साथ दे देता है, खूबी! बनवीर की बाँह में ही कटार का वार कर बैठी और क्रोध से फुँफकारते हुए उसने पलंग पर सोए बच्चे पर तलवार चला दी। पलंग पर से चीख तक नहीं उठी; माँ के कलेजे को भेदकर जो चीख उठी वह आज भी चित्तौड़ के खण्डहरों में गूँज रही होगी। माँ के मीठे दुलार में सोया हुआ चंदन आज तक भी उस दुलार की छाया में सोया हुआ होगा। खूबी !

जीजी आगे कुछ कह नहीं सकी, उसका गला भर आया था, आँखों से आँसू झर रहे थे। खूबीलाल की आँखें भी तर हो गयी थी।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

मर्दानी	–	मर्दों जैसा काम करने वाली
दृष्टि	–	नजर
पातकी	–	पापी
स्वेच्छा	–	अपनी इच्छा
कालग्रस्त	–	मृत्यु को प्राप्त
निधन	–	मृत्यु
षड्यंत्र	–	साजिश
खंडहर	–	टूटे घर
निष्कंटक	–	काँटे रहित, बाधा रहित
अनभिज्ञ	–	अनजान
निरापद	–	जिसमें कोई आपत्ति नहीं हो / सुरक्षित
भेदिये	–	भेद देने वाले
बारी	–	सफाई कर्मी
शयन कक्ष	–	सोने का कमरा
निद्रामग्न	–	नींद में डूबा हुआ

उच्चारण के लिए

मर्दानी, अंत्याक्षरी, अहिल्या बाई, कालग्रस्त, संग्राम सिंह, षड़यंत्र, कर्मचारियों, दुर्भाग्यपूर्ण, महादुष्ट, नवरात्र, निष्कंटक, अट्टहास, क्षत्रियत्व

सोचें और बताएँ

1. पाठ में किन–किन शक्तिशाली महिलाओं के नाम आए हैं ?
2. चित्तौड़गढ़ में कब अव्यवस्था फैल गई थी ?
3. उदयसिंह को महल में छिपाने से कोई लाभ नहीं था। क्यों ?

लिखें

1. निम्नलिखित पंक्तियों में दिए खाली स्थानों की पूर्ति करें

   (अ) उदयसिंह को नाच–रंग में नहीं जाने दिया था, इसलिए वह रूठकर....................

में ही सो गया था।

(ब) उदयसिंह पर पन्नाधाय.......................... छाई हुई थी ।

2. सही उत्तर चुनकर क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखें

(अ) उदयसिंह की देखभाल कौन करती थी–

(क) पन्नाधाय (ग) रानी

(ख) दासी (घ) महारानी ( )

(ब) पन्ना धाय का एक मात्र बेटा था–

(क) उदयसिंह (ग) विक्रमसिंह

(ख) चंदन (घ) बनवीर ( )

3. दासी पुत्र बनवीर क्या चाहता था ?

4. महादुष्ट बनवीर ने क्या चाल सोची थी ?

5. पन्नाधाय ने बनवीर की चाल को कैसे असफल किया ?

6. कीरत बारी ने क्या काम किया था ?

भाषा की बात

- नीचे लिखे वाक्यों में दिए गए गहरे काले शब्दों को सम्मिलित करते हुए बहुवचन के वाक्य बनाएँ। जैसे– खिड़की खुली थी । –– खिड़कियाँ खुली थीं ।

(क) मोहन ने **ताली** बजाई। ____________________

(ख) खूबीलाल ने **कहानी** सुनी। ____________________

(ग) रण में **रानी** लड़ रही थी। ____________________

(घ) **दासी** आ रही है। ____________________

- राधा ने पूरी कविता सुनाई। वाक्य में "**पूरी**" शब्द कविता की विशेषता बता रहा है।

- आप भी पाठ में आए विशेषण वाले वाक्यों की सूची बनाकर वाक्य में आए विशेषण शब्दों को छाँटकर लिखें।

वाक्य	**वाक्य में आए विशेषण शब्द**
_______________	_______________________
_______________	_______________________
_______________	_______________________

______________ ______________________

- इन चिह्नों (, । ? !) को पहचाने।
  पाठ में ये चिह्न कहाँ आए हैं, इन्हें देखो और समझो। इन चिह्नों को क्या कहते हैं ?
  चर्चा करो।

यह भी करें–

- पन्नाधाय की तरह ही आपके आस–पास किसी महिला ने कर्त्तव्य पालन के लिए त्याग किया हो तो पता कर कक्षा में सुनाएँ।
- यदि आप पन्नाधाय के स्थान पर होते तो उदयसिंह को कैसे बचाते ?
- कल्पना करो कि पन्नाधाय ने अपने पुत्र का बलिदान नहीं दिया होता तो क्या होता ?

> जो व्यक्ति शक्ति नहीं होते हुए भी मन से हार नहीं मानता है,
> उसको दुनिया की कोई भी ताकत हरा नहीं सकती।
>
> –चाणक्य